Research Times/Vol 8/September 2020 ISSN 2393-81…

नृत्य में घुँघरू का महत्व

डॉ. अपर्णा चाचोंदिया
सहायक प्राध्यापक (नृत्य)
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश :

'घुँघरू' शब्द से ही एक मधुर ध्वनि की झनकार सी कानों में प्रतीत होने लगती है। भारतीय नृत्यकला को शास्त्रीय नृत्य, कलानृत्य और आदिवासी नृत्यों में वर्गीकृत माना जाता है। सभी नृत्यों में घुँघरू का प्रयोग किया जाता है, किन्तु शास्त्रीय नृत्य परम्परा में घुँघरू को नृत्य का प्राण माना गया है। जिस प्रकार भाषा में वर्णमाला का महत्व है। उसी प्रकार शास्त्रीय नृत्यों में घुँघरू का महत्व है। विशेष रूप में उत्तर भारत के शास्त्रीय नृत्य 'कथक' में पदसंचालन का विशेष महत्व है, जिसमें प्रत्येक बोल को पैरों की निकासी से स्पष्ट किया जाता है जो कि बिना घुँघरू के संभव नहीं है। प्राचीन साहित्यकारों एवं शास्त्र रचनाकारों ने भी 'घुँघरू' के विषय में विस्तार से चर्चा की है। और उनके आकार प्रकार, बनाने और बाँधने के नियम भी बतलाए है जिनका अनुसरण आज भी नृत्य के विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है।

मुख्य-शब्द - शास्त्रीय, नूपुर, घुँघरू, नृत्य, लयताल।

भारतीय नृत्यों में घुँघरूओं का बहुत महत्व है। विशेष रूप से भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों में घुँघरू को एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। घुँघरू भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों के अभिन्न अंग हैं। भले ही नर्तक- नर्तकियों द्वारा घुँघरूओं को पैर में बांधा जाता है, किन्तु पैरों में बांधने से पूर्व कलाकार माथे से लगाकर इनको नमन करते हैं। नृत्य के उपरांत भी जब कलाकार घुंघरू खोलते हैं तो उन्हें पुनः नमन करके सम्मान के साथ उचित स्थान पर रखते हैं। प्रत्येक कलाकार अपने घुंघरूओं की पूजा करता है। नृत्य शिक्षा प्रारंभ होने के साथ ही नृत्य के विद्यार्थियों को घुँघरूओं से संबंधित सारी जानकारी दी जाती है। जिसमें घुँघरू के आकार, प्रकार, संख्या, बनाने और बांधने के तरीके और नियमों को सविस्तार समझा दिया जाता है।

वैसे तो लोकनृत्यों में भी लोक कलाकारों द्वारा घुंघरू का प्रयोग किया जाता है, लेकिन शास्त्रीय-नृत्य शैलियों में घुँघरू नृत्य के प्राण के समान हैं। जिस तरह शास्त्रीय नृत्य शास्त्राधारित होते हैं, उसी तरह घुंघरूओं का विवरण भी शास्त्रों में दिया गया है। जो न केवल इनकी प्राचीनता का प्रमाण है, अपितु शास्त्रीय नृत्य शैलियों के चिरसंगी होने का भी प्रमाण हैं। 'नूपुर' और 'किंकिणी' भी घुँघरू के पर्याय माने जाते है। घुँघरू की ध्वनि बहुत ही कर्णप्रिय और मधुर होती है। घुँघरू की झनकार हमें अनायास ही नृत्यलोक में ले जाती है, और स्वतः ही रस की सृष्टि होने

लगती है। घुँघरू की ध्वनिमात्र ही रसिक जनों को भावविभोर करने के लिए पर्याप्त होती है। घुंघरू दृश्य एवं श्रव्य दोनों ही होते हैं। यह न केवल ध्वनि के माध्यम से नृत्य में संगत का कार्य करते हैं, अपितु आभूषण के समान पैरों को सौन्दर्य भी प्रदान करते हैं।

प्राचीनकाल से ही नृत्य के क्षेत्र में घुँघरूओं का इतना महत्व रहा है कि भरतमुनि को 'नाट्यशास्त्र' में इसके नाम पर नृत्य की मुद्राओं और चारियों का नाम तक रखना पड़ा। भरत ने एक करण का नाम 'नूपुर' रखा और एक चारी का नाम 'नूपुर पाटिका'।

शास्त्रों में घुंघरू को अत्यंत आवश्यक विषय वस्तु के रूप में स्थान प्राप्त है। आचार्य नन्दिकेश्वरकृत अभिनय-दर्पण को नृत्य का आधार ग्रंथ माना गया है। आचार्य नन्दिकेश्वर ने घुँघरू से संबंधित सभी पक्षों पर सविस्तार चर्चा की है, जिसका अनुसरण नृत्याचार्यों द्वारा किया गया और नृत्यगुरू इसकी शिक्षा अपने समस्त नृत्य-विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से प्रदान करते हैं। यह परम्परा नृत्य जगत में अभी भी प्रचलित है।

आचार्य नन्दिकेश्वर ने किंकिणी लक्षण के अंतर्गत घुँघरू के बारे में लिखा है -

सुस्वाराश्च सुरूपाश्च सूक्ष्मा नक्षत्रदेवताः।
किंकिण्यः कांस्यरचिता एकैकांगुलिकान्तरम् ।।29।।
बध्नीयान्नीलसूत्रेण ग्रन्थिभिश्च दृढं पुनः।
शतद्वयं शतं वापि पादयोर्नाट्यकारिणी।।30।।2

अर्थात् घुँघरू की ध्वनि मधुर एवं लगभग एक समान होना चाहिए, देखने में सुन्दर होना चाहिए, आकार में छोटे होना चाहिए, उनकी बनावट चंद्राकार एवं इनका निर्माण कांसे से किया जाना चाहिए। घुँघरूओं को एक-एक अंगुल के अन्तर से पिरोया जाना चाहिए। घुंघरूओं के पिरोने के लिए नीले रंग के धागे या रस्सी में बांधना चाहिए एवं उसकी गांठें बहुत मजबूत लगाना चाहिए। नर्तकी को अपने दोनों पैरों में 100-100 या 200-200 घुँघरू बांधना चाहिए।

शास्त्रों में बताए गए नियमों का पालन करने की शिक्षा आज भी नृत्य गुरूओं द्वारा अपने विद्यार्थियों को विधिवत रूप से दी जाती हैं। आजकल घुँघरू कांसे के न होकर पीतल से बनाए जाते हैं। पहले दो फलक के घुँघरू का चलन था। आजकल चार फलक के घुँघरूओं का चलन है। इनके आकार के आधार पर उनका नम्बर भी निर्धारित कर दिया गया है। जिससे नृत्य के प्रारंभिक विद्यार्थियों को घुँघरू खरीदते समय परेशानी न हो और वे आसानी से समान आकार के घुँघरू खरीद सकें। घुँघरू खरीदते समय और भी सावधानियां रखना चाहिए, जैसे घुँघरू को ध्यान से देखना चाहिए यदि उनमें कहीं से नोक निकली है तो उसे घिसवा कर चिकना करवायें या उसे बदल दें। घुँघरू अंदर से खाली न हो नहीं तो वो ध्वनि उत्पन्न नहीं कर पाएगा। घुँघरू पैर में न चुभे इसलिए उन्हें चमड़े या कपड़े के मोटे पट्टे में बनाया जाने लगा लेकिन ऐसे घुँघरूओं की ध्वनि दब जाती है, और स्पष्ट भी नहीं सुनाई देती। इसलिए डोरी में पिरोये घुँघरू का ही प्रयोग नृत्य में किया जाना चाहिए। घुँघरू बांधते समय उन्हें सावधानीपूर्वक बांधना चाहिए। न तो बहुत कसकर और न ही ढीला। घुँघरू सही तरीके से ना बांधने पर पैरों में घाव हो जाते हैं,

और काले निशान पड़ जाते हैं। लगातार काफी समय तक नृत्य करने से घुँघरू के अंदर का कंकड़ निकल जाता है। उनके फलक फैल जाते हैं। जिससे उनकी ध्वनि में असमानता आ जाती है। अतः नृत्य के विद्यार्थियों को समय-समय पर अपने घुँघरूओं का निरीक्षण करते रहना चाहिए और आवश्यकतानुसार पुराने और खराब हो चुके घुँघरू को बदल कर नये घुँघरू पिरो देना चाहिए। यदि घुँघरू की डोरी खराब हो चुकी है तो उसमें बार-बार गांठ न बांधकर नई डोरी में घुँघरू पिरो देना चाहिए, क्योंकि पुरानी डोरी नृत्य प्रदर्शन के बीच में बार-बार टूटकर न केवल नृत्य प्रदर्शन में व्यवधान उत्पन्न करेगी अपितु घुँघरू के टूटकर गिरने से पैर में चोट लगने की संभावना भी रहती है। बार-बार गांठ लगाने पर गांठें भी पैर में चुभने से भी नृत्य से ध्यान हटता है। इस तरह घुँघरू खरीदते समय उनके चयन से लेकर उनको बनाने, बांधने और रखरखाव संबंधी जानकारी इत्यादि के प्रति नृत्य के विद्यार्थियों को जागरूक रहना चाहिए।

लगभग सभी शास्त्रीय नृत्य भावपक्ष एवं तालपक्ष में वर्गीकृत होते हैं। ताण्डव एवं लास्य अंग शास्त्रीय नृत्य शैलियों के आधार हैं। इन्हीं अंगों पर आधारित नृत्य सम्पूर्णता को प्राप्त होते हैं। अर्थात् इनमें सभी पक्ष समाहित होते हैं, एक तरफ ताण्डव नृत्य जैसी तेजी-तैयारी तो दूसरी ओर लास्य अंग की सुकोमलता। यदि हम ये कहें कि घुँघरू की ध्वनि से हम नृत्य प्रदर्शन में ताण्डव एवं लास्य अंगों का विभेद कर सकते हैं तो यह कहना गलत नहीं होगा। नृत्य प्रदर्शन करते समय बहुत से ऐसे दृश्य होते हैं, जिन्हें कुशल कलाकार अपने अभ्यास और घुँघरू की ध्वनि के सहयोग से मंच पर जीवंत कर देता है। जैसे बादलों का गर्जन, पुष्पवर्षा, युद्ध का दृश्य, बारिश, नदी का बहना आदि। दर्शकों में विभिन्न रसों की सृष्टि करने में भी घुँघरू की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जैसे रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स आदि रसों के प्रदर्शन में घुँघरूओं की खुली और तेज ध्वनि, तीव्र लय एवं श्रृंगार रस में घुंघरूओं की मधुर ध्वनि अधिकतर मध्य लय, करूण रस में घुँघरूओं की ध्वनि शिथिल लगभग विलम्बित लय, शांत रस के प्रदर्शन में घुँघरू की ध्वनि अत्यंत सौम्य होती है। नायक-नायिका भेदों के प्रदर्शन में भी घुँघरूओं की ध्वनि से भाव को समझा जा सकता है।

वैसे तो सभी शास्त्रीय नृत्य शैलियों में घुंघरू विशेष महत्व रखते हैं, किन्तु कथक नृत्य में घुँघरू का सर्वाधिक प्रयोग होता है। कथक नृत्य में घुँघरूओं के ऐसे-ऐसे चमत्कारिक प्रभाव देखने को मिलते हैं, जो अन्य किसी भी शास्त्रीय नृत्य शैली में दिखाई नहीं देते। कथक नृत्य में पैरों के संतुलन और बोलों की निकासी का विशेष महत्व होता है। कथक नृत्य के विद्यार्थियों को प्रारंभ से ही पैरों के संतुलन के लिए घुँघरू बांध कर अभ्यास कराया जाता है, जिससे उनके नृत्य में स्थिरता दिखाई दे। कथक नृत्य में किसी भी बोल की जैसी पढन्त होती है, अर्थात् किसी बोल को जिस तरीके से बोला जाता है ज्यों का त्यों पैरों की थाप से उन बोलों की निकासी की जाती है। बोलों की शुद्ध निकासी में घुँघरूओं का विशेष महत्व होता है, जिसके लिए नृत्य के विद्यार्थियों को पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता होती है। अभ्यास के अभाव या अन्य किसी भी प्रकार के व्यवधान से यदि घुँघरू की ध्वनि निर्धारित मात्रा से कम या अधिक हो जाती है, तो सारा प्रदर्शन खराब हो जाता है। जिस प्रकार हम किसी के द्वारा किये गए गलत काम की चुगली बाहर सभी से कर देते हैं, उसी तरह नृत्य करते हुए यदि एक भी पद थाप गलत पड़ जाती है तो ये घुँघरू तुरंत ही इसकी चुगली दर्शकों से कर देते हैं। इसलिए कथक नृत्य के कलाकार बहुत ही सावधानी एवं एकाग्रता के साथ घुँघरूओं के सहयोग से पैरों द्वारा बोलों की निकासी का अभ्यास करते हैं। कुशल कलाकार

इन घुँघरूओं से विभिन्न प्रकार के चमत्कारिक प्रभाव पैदा करने में सक्षम होते हैं। जैसे बहुत अधिक एकाग्रता के साथ पैरों में बहुत सारे घुँघरू पहनने के बाद भी पद संचालन पर नियंत्रण रखते हुए केवल एक ही घुंघरू की ध्वनि पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, और दर्शकों को केवल एक ही घुँघरू की ध्वनि सुनाई देती है। अभ्यास के द्वारा बोलों के उतार-चढ़ाव को घुँघरू की ध्वनि के द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जा सकता है। कथक नृत्य में पद-संचालन का विशेष महत्व है। ततकार, लयकारी, सवाल-जवाब, जुगलबंदी, लयबांद, ततकार के पल्टे आदि समस्त क्रियाओं में घुँघरूओं की प्रमुख भूमिका रहती है।

वैसे तो शास्त्रीय नृत्य शैलियों में घुँघरू का महत्व एवं इसका प्रयोग इसकी प्राचीनता सिद्ध करता है, किन्तु अभी घुँघरू कहां बनते हैं? ये भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न है। वैसे तो ऐसी कई जगहें होंगीं जहां पर घुँघरू का उद्योग होता होगा, लेकिन जलैसर एक ऐसा कस्बा है जहां विभिन्न प्रकार के घुँघरूओं का निर्माण होता है, इसलिए इसे 'घुँघरू नगरी' के नाम से जाना जाता है। जलैसर उत्तर प्रदेश राज्य के एटा में आगरा के उत्तर-पूर्व में लगभग 50 कि.मी. दूर एक छोटा सा कस्बा है। अतः हम कह सकते हैं कि घुँघरू न केवल नृत्य प्रस्तुति के सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं, बल्कि लयताल को भी नियंत्रित करते हैं। घुँघरू शास्त्रीय नृत्यों के प्राण हैं, नर्तक-नर्तकियों के शस्त्र हैं, और दर्शकों का ध्यान आकर्षित करके उनमें रस सृष्टि करने का साधन हैं।

संदर्भ :

- पं. तीर्थराम आजाद-कथक ज्ञानेश्वरी, नटेश्वर कला मंदिर, भारती आर्टिस्ट कॉलोनी, विकास मार्ग, दिल्ली, पेज-463
- डॉ. पुरू दाधीच - अभिनय दर्पण, बिन्दु प्रकाशन, उज्जैन (म.प्र.), पेज- 10
- डॉ. बिजेन्द्र सिंह-'जलैसर कस्बे में घण्टा एवं घुँघरू उद्योग' (शोधपत्र), पेज- 110
- रिसर्च लाइन Volume XVIII :, Quarterly May & July 2015, 205 पत्रकार कॉलोनी, विजय नगर, सेक्टर - 3, ग्वालियर (म.प्र.)

❖ ❖ ❖